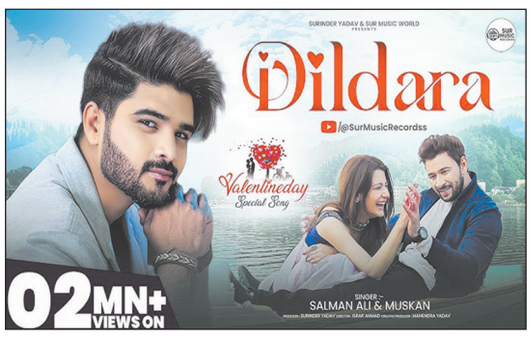

सलमान अली और मुस्कान का गाना 'दिलदारा' रिलीज़

इंडियन आइडल फेम सलमान अली और मुस्कान का गाना 'दिलदारा' रिलीज़ हो गया है. यह गाना सुर म्यूजिक रिकार्ड्स के ऑफिसियल चैनल से रिलीज हुआ है.इस गीत को इंडियन आइडल फेम सलमान अली और मुस्कान ने गया है, वहीं समीर खान रॉयल ने भी सिंगिंग में खास योगदान दिया है.

गाने को लेकर सलमान अली ने कहा कि 'दिलदारा मेरे दिल के बेहद करीब है. यह सिर्फ एक गाना नहीं, बल्कि प्यार के उन एहसासों की कहानी है, जिसे हर कोई वेलेंटाइन डे पर महसूस करता है. इस गाने में सादगी, सच्चा प्रेम और भावनाएं हैं, जिन्हें हमने पूरी ईमानदारी से आवाज़ दी है. मुझे उम्मीद है कि श्रोता इस गीत को अपने दिल से जोड़ेंगे और अपने खास पलों का हिस्सा बनाएंगे.'

गीत के बोल अंकिता खत्री 'नादान' ने लिखे हैं, जो प्रेम की मासूमियत और गहराई को बेहद खूबसूरती से बयां करते हैं. समीर खान रॉयल का संगीत गाने को और भी मधुर बनाता है, जो सीधे दिल को छू जाता है. 'दिलदारा' में दिखाया गया प्यार का एहसास वेलेंटाइन डे के जश्न को और खास बना देता है.

वीडियो में अभिनेता देव शर्मा और दिया भट्ट की जोड़ी दर्शकों को खूब पसंद आ रही है. दोनों की केमिस्ट्री गाने की कहानी को जीवंत बना देती है. निर्देशक इसरार अहमद ने रोमांटिक सीन को बेहद सलीके से पर्दे पर उतारा है. गाने की शूटिंग खूबसूरत और मनोरम लोकेशन्स पर की गई है, जहां की प्राकृतिक सुंदरता प्रेम कहानी को और आकर्षक बनाती है.

वीडियो के निर्माता सुरिंदर यादव हैं, जबकि कोरियोग्राफर राज सहगल ने रोमांटिक मूव्स से गाने में जान डाल दी है. डीओपी कुंदन धीमान की सिनेमैटोग्राफी हर फ्रेम को यादगार बनाती है.

जिन कहानियों का अंजाम न हो, उन्हें एक खूबसूरत मोड़ देकर छोड़ दें

बॉलीवुड अभिनेता सिद्धांत चतुर्वेदी का कहना है कि जिन कहानियों का अंजाम न हो, उन्हें एक खूबसूरत मोड़ देकर छोड़ देना चाहिये. अपनी आने वाली फिल्म 'दो दीवाने सहर में' की रिलीज़ की तैयारी कर रहे सिद्धांत चतुर्वेदी इन दिनों अपनी ज़िंदगी के उस दौर को याद कर रहे हैं, जिसने बिना शोर किए उनके सफ़र की दिशा तय की. यह वो समय था जब न नाम था, न पहचान थी, थे तो बस सपने और एक गहरा प्यार.

अपने अनुशासन और मेहनत के लिए पहचाने जाने वाले सिद्धांत का बॉलीवुड तक का सफ़र आसान नहीं रहा. एक मिडिल-क्लास परिवार में पले-बढ़े सिद्धांत शुरुआत में अपने पिता की तरह चार्टर्ड अकाउंटेंसी की पढ़ाई कर रहे थे, लेकिन साथ ही कुछ अलग कर गुज़रने का ख्याल दिल में पाले सिद्धांत दिल ही दिल में अभिनेता बनने का सपना पाल चुके थे. आखिरकार एक कड़ा फैसला लेते हुए उन्होंने आर्थिक स्थिरता को छोड़कर अपने सपने को चुन लिया.

सिद्धांत ने अपनी ज़िंदगी के एक अहम रिश्ते के बारे में खुलकर बात की, जिसकी शुरुआत तब हुई थी जब वह सिर्फ़ 18 साल के थे. उन्होंने कहा, 'एक लड़की थी जिससे मैं बहुत प्यार करता था. हम दोनों एक ही क्लास में थे. मैं रोज़ उसके लिए उल्टी दिशा में ट्रेन पकड़कर जाता था, जबकि मेरा घर दूसरी तरफ़ था.

सिद्धांत का यह रिश्ता करीब चार साल तक चला, लेकिन जैसे-जैसे सिद्धांत के सपने बड़े होते गए, हालात मुश्किल होते चले गए. उन्होंने बताया, 'मैं अभिनेता बनना चाहता था और वह 24 की उम्र तक शादी करना चाहती थी. मैंने उससे कहा कि मैं कुछ बिल्कुल नया शुरू कर रहा हूं और मुझे नहीं पता इसमें कितना वक्त लगेगा. क्या तुम मेरे लिए इंतज़ार कर सकती हो? उसने कहा कि वो इंतज़ार करेगी. उसने किया भी, लेकिन फिर उसे समझ आया कि मैं बहुत दबाव में हूं.'

सिद्धांत उन लम्हों को याद करते हुए कहते हैं, 'उसने मुझसे कहा था, कि तुम्हारा सफर काफी लंबा है. अच्छी बात यह है कि तुम्हें पता है कि तुम्हें क्या करना है और मैं चाहती हूं कि तुम बिना किसी दबाव के अपने सपने पूरे करो. हम अलग हो रहे हैं, लेकिन तुम अपने सपने ज़रूर पूरे करना. तुम्हें किसी मुकाम तक ज़रूर पहुंचना होगा.'

हालांकि सालों बाद 'गली बॉय' से मिली कामयाबी ने उस वादे को पूरा तो कर दिया था, लेकिन उसकी कमी कायम थी.

अरुणा ईरानी ने महमूद पर लगाया आरोप

बॉलीवुड की दिग्गज एक्ट्रेस अरुणा ईरानी ने एक इंटरव्यू दिया है और उसमें दिवंगत अभिनेता महमूद संग अपने रिश्ते के बारे में बात की है. बताया कि उनका अफेयर तब शुरू हुआ था, जब उनकी शादी हो चुकी थी. उन्होंने आरोप लगाया कि एक्टर ने उनका एक्टिंग करियर बर्बाद कर दिया था. वहीं, इंडस्ट्री पर भी आरोप लगाया कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में शुरुआती दौर में उनका खूब शोषण किया गया था.

अरुणा ईरानी ने 'जूम' से खास बातचीत में अपने शुरुआती संघर्ष और चुनौतियों के बारे में बात की. कहा, 'हर कदम पर मुश्किलें थीं. बाहर जाकर काम खोजना भी एक चुनौती थी.

उन दिनों, खासकर फिल्म इंडस्ट्री में, लोग आपका शोषण करने के लिए तैयार रहते थे. आपको बस उसके लिए खुद को तैयार रखना होता था. हालांक मैं खुद को ऐसा दिखाती थी कि मैं बहुत मासूम हैं और कुछ नहीं समझती. मेरे सामने खड़ा इंसान ये समझ ही नहीं सकता था कि मैं बेवकूफ हूं या क्या हूं.'

एक्ट्रेस ने आगे बताया कि वह बड़े प्यार से चाय-कॉफी पूछने पर भी मना कर देती थीं. 'महमूद जी ने मुझे पहली बार काम दिया था. उस रिश्ते की शुरुआत एक मजबूरी से हुई थी, और यहीं से हमारे बीच सब शुरू हुआ. बाद में महमूद जी के रास्ते अलग हो गए. उनके रिश्तों के डायनमिक्स बदल गए थे. वो किसी दूसरे प्रोजेक्ट पर काम करने लगे और मैं दूसरे शोज करने लगी. और तभी मैं ये महसूस करने लगी थी कि वह मेरा खुलेआम शोषण कर रहे हैं.'

टेलीविजन हलचल

सहज राजपूत ने साझा किए अपने अनुभव

ज़ी टीवी का शो 'जाने अनजाने हम मिले', जिसमें भारत अहलावत (राघव) और आयुषी खुराना (रीत) नजर आ रहे हैं, हाल ही में एक बेहद नाजुक और झकझोर देने वाला सीन लेकर आया. इस सीन में उन्नति का किरदार निभा रहीं सहज राजपूत पर शारीरिक हमला होता है. ये सीन सिर्फ कहानी का अहम हिस्सा नहीं बना, बल्कि सहज के लिए इसे शूट करना भी आसान नहीं रहा.

एपिसोड में दिखाया गया कि एक ठग, जो लंबे समय से उन्नति का पीछा कर रहा था, पार्टी के दौरान उस पर हमला कर देता है. हाल में टेलीकास्ट हुए इस सीन में घटना के बाद उन्नति जिस गहरे सदमे से गुजरती है, उसे बड़ी सच्चाई से दिखाया गया है. कैमरे के पीछे भी ये सीन सहज के लिए आसान नहीं था, क्योंकि पहली बार उन्होंने स्क्रीन पर इतना तीखा सीन किया. एक एक्टर के तौर पर वो मानसिक रूप से तैयार थीं, लेकिन ऐसे हमले को निभाना उन पर अंदर तक असर छोड़ गया.

इस अनुभव को साझा करते हुए सहज ने कहा, 'ये सीन मेरे लिए खास तौर पर मुश्किल था, क्योंकि इसमें काफी शारीरिक एक्शन था, जैसे हमलावर का सामना करना और उसे धक्का देना. हमारे डायरेक्टर ने पूरा माहौल सहज रखा और मुझे उस स्थिति में ढलने में मदद की. उस सीन के दौरान मैं पूरी तरह किरदार में डूब गई थी. इसे करते हुए मैं अंदर तक प्रभावित हुई, लेकिन एक कलाकार होने की सबसे खूबसूरत बात यही है कि आप हर एहसास को सच में जीते हैं.

तरुण खन्ना निभाएंगे महादेव का किरदार

एण्डटीवी एक बार फिर दर्शकों के लिए हल्का-फुल्का, दिल को छू लेने वाला मनोरंजन लेकर आ रहा है. चैनल का नया डिवाइन ड्रैमेडी शो 'हे भगवान- कितना बदल गया इंसान !' जल्द ही शुरू होने वाला है. यह शो उज्जैन की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिसमें रोज़मर्रा की जिंदगी का हास्य, भावनाएं और पौराणिक अंदाज़ का अनोखा मेल देखने को मिलेगा. इस खास कहानी में मशहूर अभिनेता तरुण खन्ना भगवान महादेव की भूमिका निभाते नजर आएंगे. तरुण खन्ना इससे पहले भी कई पौराणिक किरदारों में अपनी दमदार अदाकारी के लिए जाने जाते रहे हैं. इस शो में वह महादेव को एक ऐसे रूप में पेश करेंगे, जो दिव्य होने के साथ-साथ मानवीय भी है जहां भगवान इंसानों के बीच रहकर उनके जीवन को समझते और दिशा देते दिखाई देंगे.

सेंगोल के इतिहास को बड़े पर्दे पर लाएगी 'स्वयंभू'

अभिनेता निखिल सिद्धार्थ का कहना है कि उनकी आने वाली फिल्म 'स्वयंभू' सेंगोल के इतिहास को बड़े पर्दे पर लाएगी. सेंगोल हाल ही में तब चर्चा में आया था, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई संसद भवन के उद्घाटन समारोह के दौरान इसे स्थापित किया.

फिल्म स्वयंभू में लीड रोल निभा रहे निखिल सिद्धार्थ ने फिल्म की कहानी की जड़ों के बारे में बात की है. उन्होंने बताया कि फिल्म भारतीय इतिहास और संस्कृति से जुड़ी है और इसकी प्रेरणा सेंगोल से ली गई है. सेंगोल को सही शासन, न्याय और नैतिक ताकत का प्रतीक माना जाता है, और यही सोच फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाती है.

निखिल ने कहा , 'स्वयंभू की कहानी भारतीय इतिहास के एक बहुत खास और यूनिक पहलू से निकली है, और वो है सेंगोल का इतिहास. आज हम में से ज़्यादातर लोग सेंगोल को उस प्रतीक के तौर पर जानते हैं, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद के उद्घाटन के समय स्थापित किया, लेकिन बहुत कम लोग इसके पीछे का समृद्ध इतिहास जानते हैं. सेंगोल सबसे पहले भगवान राम ने अपने वंशज को दिया था. यह धर्मपूर्ण शासन, न्याय और सही तरीके से शासन करने की शक्ति का प्रतीक है. यह सेंगोल भारत के इतिहास में आगे बढ़ता रहा और चोल साम्राज्य जैसे महान भारतीय साम्राज्यों में इसका खास महत्व रहा. हमने सेंगोल और अपने हीरो को केंद्र में रखकर एक फिक्शनल कहानी रची है.'

इस बीच मेकर्स ने ऐलान किया है कि स्वयंभू का टीज़र 11 फरवरी को दो शहरों में एक साथ होने वाले ग्रैंड पैन-इंडिया इवेंट में लॉन्च किया जाएगा.

फिल्म स्वयंभू को पिक्सल स्टूडियोज़ के भुवन और श्रीकर ने प्रोड्यूस किया है. भारत के समृद्ध इतिहास और कालातीत गौरव को समर्पित इस भव्य फिल्म को 13 फरवरी 2026 को दुनिया भर में रिलीज़ किया जाएगा.

'द मेहता बॉयज़' के प्रदर्शन के एक साल पूरे

अभिनेता अविनाश तिवारी फिल्म 'द मेहता बॉयज़' के प्रदर्शन के एक साल पूरे होने पर भावुक हो गये. अविनाश तिवारी ने फिल्म 'द मेहता बॉयज़' में अमय मेहता के किरदार के ज़रिए दर्शकों के दिलों को छू लिया था. यह परफॉर्मेंस न सिर्फ़ खूब पसंद की गई, बल्कि अविनाश के करियर में एक और यादगार किरदार के रूप में दर्ज हो गई.

वर्ष 2025 में रिलीज़ हुई 'द मेहता बॉयज़' को अब एक साल पूरा हो चुका है.इस खास पड़ाव पर उन्होंने फ़िल्म और उस किरदार के सफ़र को याद करते हुए अपने दिल की बात साझा की.

अविनाश तिवारी ने फ़िल्म और बोमन ईरानी के साथ काम करने के अनुभव पर बात की. उन्होंने कहा, ''द मेहता बॉयज़' को रिलीज़ हुए एक साल हो गया है, लेकिन मैं आज भी इस फ़िल्म से गहराई से जुड़ा हुआ महसूस करता हूं. जिस पल ये कहानी मेरे पास आई, उसकी सच्चाई और भावनात्मक गहराई से मैं तुरंत जुड़ गया. अमय बहुत असली लगा ,खामियों से भरा, नाज़ुक, इंसानी. ऐसे में इसे ना कहना मेरे लिए मुमकिन ही नहीं था. मुझे याद है, मैंने खुद से कहा था, 'यदि तुम खुद को सच में कलाकार कहते हो, तो इसे जाने नहीं दे सकते,' और मैंने बिना हिचक हां कर दी.

कृषि जगत

फरवरी में गेहूं की फसलों का ऐसे रखें ध्यान

फरवरी का महीना गेहूं की फसल के लिए बेहद नाजुक माना जाता है. इस समय खेतों में गेहूं की बालियां निकल रही होती हैं या दाना भरने की प्रक्रिया, जिसे दूधिया अवस्था कहा जाता है, शुरू हो जाती है. यही वह चरण है जब फसल को सबसे ज्यादा देखभाल की जरूरत होती है. अगर इस दौरान तापमान में अचानक बढ़ोतरी हो जाए और तेज हवाएं चलने लगें, तो गेहूं के पौधों के गिरने (लॉजिंग) का खतरा काफी बढ़ जाता है. पौधे गिरने से दाना भराव प्रभावित होता है और पैदावार में 20 से 30 फीसदी तक की कमी आ सकती है.

- सही समय करें सिंचाई- फरवरी महीने में अचानक तापमान बढ़ने के बाद हवाएं तेज चलने लगती हैं. अगर आप खेत में भारी सिंचाई करते हैं और उसी समय तेज हवा चल जाए, तो गीली मिट्टी होने के कारण पौधे जड़ से उखड़कर गिर जाते हैं. इसलिए हमेशा शाम के समय या जब हवा की गति बिल्कुल कम हो, तभी हल्की सिंचाई करें. ऐसे में 'स्प्रिंकलर' (फव्वारा तकनीक) का उपयोग इस समय सबसे सुरक्षित माना जाता है.
- पोटाश और फास्फोरस का इस्तेमाल- फरवरी महीने में गेहूं फसल जिस अवस्था होती है. इस समय नाइट्रोजन का अधिक इस्तेमाल हानिकारक हो सकता है क्योंकि इससे पौधा लंबाई में ज्यादा बढ़ता है और कमजोर होकर गिर जाता है. इसलिए इस समय सही मात्रा में पोटाश और फास्फोरस का स्प्रे करें, क्योंकि पोटाश तने को मजबूती देता है और दानों को वजनदार बनाता है, जिससे पौधा हवा के थपेड़ों को सहने की शक्ति रखता है.
- बोरॉन का करें छिड़काव- फरवरी महीने में गेहूं की फसल में दाना बनते समय बोरॉन की कमी से बालियां सूख सकती हैं या दाने छोटे रह सकते हैं. ऐसे में किसान फसलों में बोरॉन का छिड़काव कर सकते हैं. इससे परागण में मदद मिलता है और पौधे की कोशिकाओं को लचीला बनाता है.

आम के बौर में लग सकते हैं ये खतरनाक कीट

खेती के बाद बागवानी किसानों के लिए बेहतर आय का सबसे सशक्त माध्यम बनकर उभरी है. फल उत्पादन के कुल क्षेत्रफल में से लगभग एक-तिहाई हिस्सा अकेले आम की बागवानी के अंतर्गत आता है. उत्तर प्रदेश से लेकर कन्याकुमारी तक, आपको हर राज्य में आम के छोटे-बड़े बाग देखने को मिल जाएंगे. आम की विभिन्न किस्में जैसे दशहरी, लंगड़ा, चौसा और अल्फांसो न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी लोकप्रिय हैं.

अगेती बौर को झुलसा रोग से बचाएं - आम के बागों में कभी-कभी समय से पहले यानी 'अगेती बौर' निकल आता है. इस नाजुक बौर पर 'झुलसा रोग' का खतरा सबसे अधिक होता है. यह रोग मुख्य रूप से फफूंदी के कारण फैलता है और इसके संक्रमण से फूल और छोटे-अविकसित फल समय से पहले ही झड़कर गिरने लगते हैं. विशेषज्ञों के अनुसार, जब वातावरण में नमी या आर्द्रता 80 प्रतिशत से अधिक हो जाती है या बेमौसम बारिश होती है, तो यह रोग अत्यंत आक्रामक हो जाता है. इससे किसानों को गंभीर आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है. इसके बचाव के लिए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे मैन्कोजेब और कार्बेन्डाजिम के 0.2 घोल 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें. इसके अलावा, ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन और टेबूकोनाजोल के मिश्रण का 0.025 फीसदी घोल भी इस रोग को रोकने में अत्यंत कारगर साबित होता है.

बौर में लग सकते हैं ये खतरनाक कीट- जनवरी का पहला सप्ताह आते ही आम के बागों में 'गुजिया कीट'की हलचल शुरू हो जाती है. यह कीट जमीन से रेंगकर पेड़ के तनों के जरिए बौर तक पहुँचता है और रस चूसकर उन्हें सुखा देता है. इसके प्रभावी नियंत्रण के लिए 'संशोधित ट्री-बैंडिंग' सबसे अच्छी तकनीक है. इसके लिए 1 किलो चिकनी मिट्टी में 250 ग्राम पी.ओ.पी. और 50 मिलीलीटर जला हुआ मोबिल तेल मिलाकर एक गाढ़ा पेस्ट तैयार करें. इस पेस्ट की 2-3 इंच चौड़ी पट्टी पेड़ के तने पर चारों तरफ लगाएं. इसके ऊपर पॉलीथीन की शीट या सेलो टेप को इस तरह लपेटें कि मिट्टी की पट्टी बीच में रहे. इसे सुतली से कसकर बांध दें ताकि कीट ऊपर न चढ़ सकें. अगर कीट पहले ही बौर तक पहुँच चुके हैं, तो डायमेथोएट 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करना चाहिए ह

बौर को अधिक क्षति करने वाला कीट- आम के पुष्प गुच्छों को नुकसान पहुंचाने वाला 'मिज कीट' एक बेहद खतनाक कीट है. हालांकि इसका प्रकोप जनवरी से जुलाई तक बना रहता है, लेकिन सबसे अधिक क्षति यह बौर और नन्हे फलों को पहुंचाता है. इस कीट के आक्रमण की पहचान बौर के डंठल, पत्तियों की नसों या कोमल तनों पर काले धब्बों से की जा सकती है.

पशु प्रसव के बाद गर्भाशय संक्रमण पहचानें

गाय-भैंस के पहली बार गाभिन होने पर पशुपालक बेहद उत्साहित रहते हैं. लेकिन प्रसव के बाद एक चिंता भी बनी रहती है—कहीं पशु दोबारा गाभिन न हो पाए. पशु विशेषज्ञों के अनुसार, कई मामलों में प्रसव के बाद गर्भाशय में संक्रमण (यूटराइन इन्फेक्शन) हो जाता है, जो आगे चलकर बांझपन की बड़ी वजह बन सकता है. सही समय पर पहचान और इलाज से इस समस्या को आसानी से रोका जा सकता है. प्राकृतिक रूप से गाय-भैंस हर साल बच्चा दे सकती है, लेकिन प्रसव के बाद लापरवाही, खराब खुराक और संक्रमण के कारण प्रजनन क्षमता प्रभावित हो जाती है.

72 घंटे में जरूर पहचानें ये लक्षण

प्रसव के बाद शुरुआती तीन दिन बहुत महत्वपूर्ण होते हैं. इस दौरान ये संकेत दिखें तो सावधान हो जाएं:

- पूंछ के आसपास चिपचिपा मवाद दिखाई देना
- मवाद फटे दूध जैसा, गाढ़ा सफेद या लालपन लिए
- पूंछ के पास मक्खियों का भिनकना
- बैठने पर मवाद का बाहर निकलना
- पीछे की ओर जोर लगाना, जलन के संकेत
- बुखार आना
- भूख कम होना और दूध कम/बंद होना

यह स्थिति गर्भाशय में मवाद (पस) बनने का संकेत है, जो कुछ मिली से लेकर कई लीटर तक हो सकता है. प्रसव के दो महीने तक संक्रमण का खतरा बना रहता है.

खुशबू से भरी रहेगी बगिया

आजकल लोगों में गार्डनिंग का शौक तेजी से बढ़ रहा है. अब लोग सिर्फ सब्जी और फलदार पौधों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अपने घर और बगीचे की सुंदरता बढ़ाने के लिए फूलों को भी प्राथमिकता दे रहे हैं. इनमें भी गुलाब की अलग-अलग किस्में सबसे ज्यादा पसंद की जा रही हैं, क्योंकि यह रंग, खुशबू और शान—तीनों का बेहतरीन संगम है.

शहरों में भी अब लोग अपने घर के गार्डन में फूल लगाना काफी पसंद कर रहे हैं. इससे न केवल बागवानी का शौक पूरा होता है, बल्कि घर भी फूलों की खुशबू से महक उठता है. अगर आप भी अपने घर या बगीचे में गुलाब लगाना चाहते हैं, तो ये तीन खास किस्में आपके लिए बेहतरीन विकल्प साबित हो सकती हैं.

डच रोज किस्म- डच रोज देखने में बेहद आकर्षक और बड़े आकार के फूलों वाली किस्म है. इसमें खुशबू नहीं होती, लेकिन इसके रंग और आकार इतने सुंदर होते हैं कि यह सजावट और गार्डन की शोभा बढ़ाने के लिए सबसे ज्यादा पसंद की जाती है.

आबरा का डाबरा गुलाब- यह किस्म अपनी चितकबरी (दो रंगों वाली) पंखुड़ियों के कारण खास पहचान रखती है. इसकी बनावट गार्डन को अलग और आकर्षक लुक देती है. कम देखरेख में भी यह अच्छी तरह बढ़ती है, इसलिए नए गार्डनिंग शौकीनों के लिए उपयुक्त है.

पुणे वाला डबल डिवाइन गुलाब- यह गुलाब अपनी मनमोहक खुशबू के लिए जाना जाता है. इसके बड़े आकार के फूल कई रंगों में मिलते हैं. खुशबू पसंद करने वालों के लिए यह पहली पसंद बनता जा रहा है और घर-गार्डन की सुंदरता कई गुना बढ़ा देता है.

जरूरी गार्डनिंग टिप्स

- समय-समय पर मिट्टी की गुड़ाई करें
- गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट या संतुलित उर्वरक दें
- ठंड में ज्यादा पानी देने से बचें, सुबह हल्की सिंचाई करें
- पोटाश और फास्फोरस पौधों को मजबूत बनाते हैं
- छंटाई है बेहद जरूरी
- सर्दियों से पहले सूखी और रोगग्रस्त टहनियों की कटाई-छंटाई करें.